CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दव प्रतिष्ठा ... की

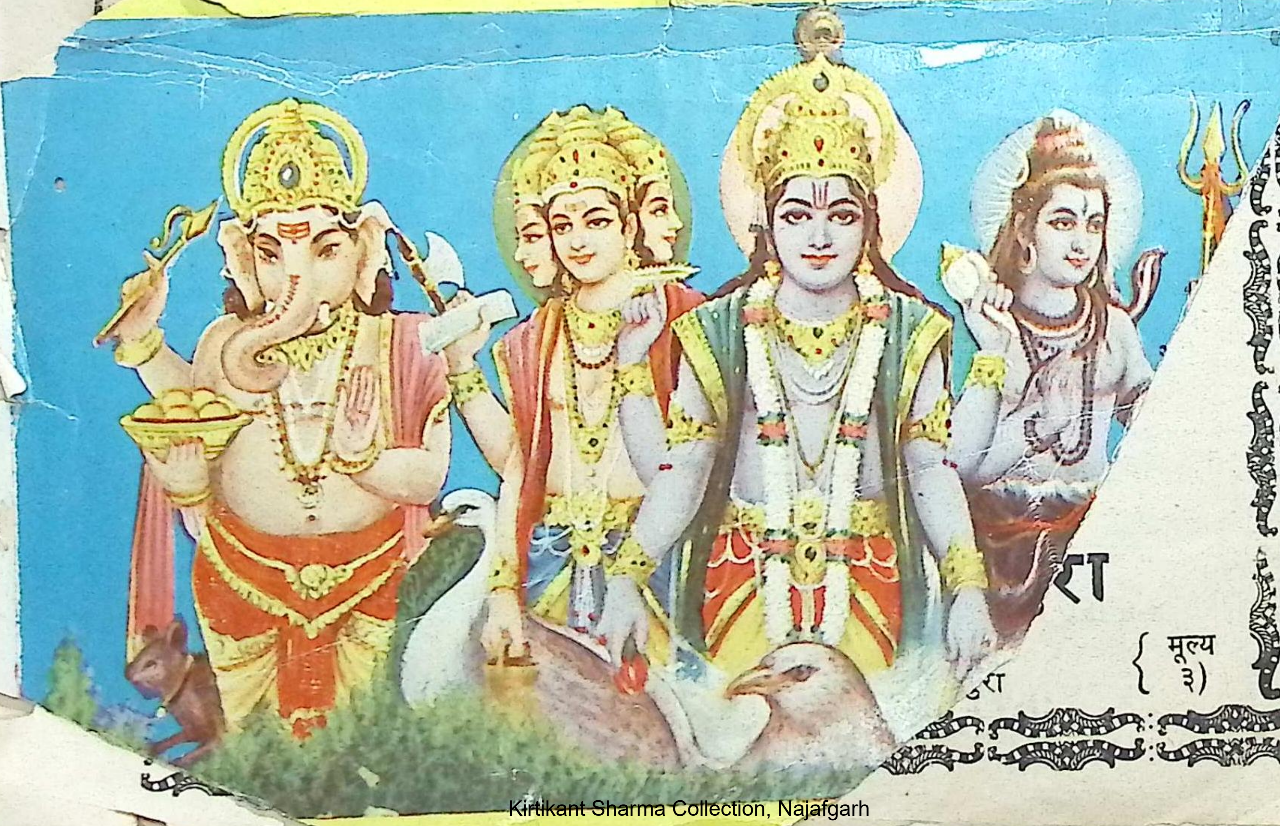

रा

ुरा

{ मूल्य ३)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* श्री रामचन्द्राय नमः *

सर्वदेव प्रतिष्ठा-पद्धति

भाषा-टीका सहिता

समस्त देवताओं की पूजा-विधि, प्राण-प्रतिष्ठा विधि, आसन-चित्रों, मन्त्र-पुष्पांजलि एवं क्षमा-प्रार्थना सहित

लेखक—ज्यो० पं० गोपालदत्त शास्त्री

प्रकाशक

वैंकटेश्वर पुस्तकालय, मथुरा

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

सन् १९७९

मुद्रक—सरल प्रिंटिंग प्रेस, चूड़ीवाली गली, मथुरा

मूल्य ३)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वदेव-प्रतिष्ठा-पद्धतिस्थ-विषयाणामनुक्रमः

विषयाः	पृ०	विषयाः	पृ०	विषयाः	पृ०
सर्वदेव पूजाविधि प्रारम्भ	५	शिवजीपरवेलपत्र चढ़ानेकामंत्र	२५	तारा ध्यान तथा मन्त्र	५६
देह शुद्धि-मन्त्र	६	अथ द्वादश विनायक पूजन	२८	त्रिपुर सुन्दरी ,, ,,	५७
शिखाबन्धन-मन्त्र	६	षोडशोपचार-पूजन	३०	भुवनेश्वरी ,, ,,	५७
यज्ञोपवीत धारण विधि	७	कलश स्थापन	३१	छिन्नमस्ता ,, ,,	५८
प्राणायाम-विधि तथा मन्त्र	८	कलश पूजन प्रयोग विधि	३१	त्रिपुरभैरवी ,, ,,	५८
अथ भद्रसूक्तम् (यजुर्वेदोक्त)	९	वरुणदेव-ध्यान	३७	धूमावती ,, ,,	५९
अथ स्वस्तिवाचनम् ,,	११	पंचोंकार-पूजन	३७	बगलामुखी ,, ,,	६०
अथ स्वस्तिवाचनम्(ऋग्वे०)	१२	सप्तर्षि-पूजन	४०	मातंगी ,, ,,	६१
श्री गणेश-वन्दना	१३	सप्त घृत मातृका पूजन	४१	कमला ,, ,,	६२
श्री विष्णु-वन्दना	१४	षोडश- मातृका पूजन	४३	कुमारी ,, ,,	६२
श्री गौरी-वन्दना	१५	नवग्रह-पूजन	४५	दुर्गा ,, ,,	६३
श्री गुरुदेव-वन्दना	१६	अधिदेवता-पूजन	५२	बटुक-भैरव ,, ,,	६४
प्रधान संकल्प	१७	प्रत्यधिदेवता-पूजन	५३	स्वर्णाकर्षण-भैरव-मन्त्र	६४
श्री गणेश-पूजन	१८	पंचलोकपालादि आवाहन	५४	गायत्री-ध्यान	६४
वेदोक्त सर्वदेव पूजन मन्त्र	१९	रक्षा बन्धन-मन्त्र	५५	वेदोक्त गायत्री मन्त्र	६५
गणेशजी पर दूव चढ़ानेका मंत्र	२५	महाकाली-ध्यान तथा मन्त्र	५६	सूर्य-ध्यान तथा म[illegible]	६५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषयाः	पृ०
शिव-ध्यान	६६
विष्णु-ध्यान	६६
(तान्त्रिक) विष्णु-मन्त्र	६७
(वेदोक्त) विष्णु-मन्त्र	६७
श्री रामचन्द्र-ध्यान	६७
श्री राम-मन्त्र	६८
श्री सीता-ध्यान	६९
श्री सीता-मन्त्र	६९
श्री हनुमान-ध्यान	६९
श्री हनुमान-मन्त्र	६९
श्री नृसिंह-भगवान-मन्त्र	७०
श्री गणेश-ध्यान	७०
श्री गणेश-मंत्र	७०
श्री कृष्ण-ध्यान	७१
श्री कृष्ण-मंत्र	७२
सन्तान गोपाल-मन्त्र	७३
दारिद्रय नाशक-गोपाल-मंत्र	७३
दुःस्वप्न नाशक श्रीकृष्ण-मन्त्र	७३
संमोहन श्रीकृष्ण-मन्त्र	७४
श्री लक्ष्मी नारायण-मन्त्र	७४
मोक्षदायक-विष्णु-मन्त्र	७४
हयग्रीव-विष्णु-मन्त्र	७४
सर्वसिद्धिप्रद-महामन्त्र	७४
वाराहरूप-विष्णु ध्यान एवं मंत्र	७४
श्री सरस्वती-ध्यान	७५
श्री सरस्वती-मन्त्र	७५
श्री शत्रुघ्न-ध्यान	७६
श्री शत्रुघ्न-मन्त्र	७६
श्री गरुड़-ध्यान तथा मंत्र	७६
श्री यमुना देवी-ध्यान	७७
श्री गंगा देवी-ध्यान	७७
श्री शीतला देवी-ध्यान	७८
श्री अन्न पूर्णा देवी-ध्यान	७८
श्री मृत्युंजय-ध्यान	७९
श्री महामृत्युंजय मन्त्र	८०
श्री अमृत संजीवनी मन्त्र	८०
श्रीतुलसी(नमस्कार,स्पर्श)मंत्र	८०
तुलसी ग्रहण मन्त्र	८१
श्री राधिका गायत्री मन्त्र	८१
श्री राधिका मन्त्र	८२
मूर्तीनामग्न्युत्तारण प्राण प्रतिष्ठा विधि	८२
सर्वेषामग्न्युत्तारणे विनियोग	८३
प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग	८५
प्रतिष्ठापनम्	८५
मूर्तीना नेत्रोन्मीलनम्	८६
षोडशोपचार पूजा विधि	८७
मन्त्र पुष्पांजलि	८७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* अथ देवि क्षमा-प्रार्थना *

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशंमया, दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्, पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि, यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।
सापराधोऽस्मिशरणंप्राप्तस्त्वांजगदम्बिके, इदानीमनुकम्प्योहं यथेच्छसि तथा कुरु ।
कामेश्वरिजगन्मातःसच्चिदानन्दविग्रहे, गृहाणार्चामिमां प्रीत्या, प्रसीदपरमेश्वरि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ❋

❋ अथ सर्वदेव प्रतिष्ठा पद्धति ❋

(पूजा-विधि सहिता)

गौ के शुद्ध गोबर से लिपी हुई वा तीर्थ जलों से प्रोक्षण की हुई पवित्र-भूमि में सर्व-प्रथम गेहूँ के चूर्ण का चौक लगावे। तदनन्तर-सुन्दर चौकी वा आम्र-पट्टा पर यथाविधिः देवताओं की स्थापना करे। यजमान सुमुहूर्तमें मंगल स्नान-करके, स्वच्छ पवित्र वस्त्रोपवस्त्रादि धारण कर, पूर्वाभिमुख होकर अपने आसन पर बैठे और शुद्ध-जल का एक पात्र अपने दक्षिण-हाथ की तरफ रक्खे।

आचार्य मन्त्र बोले-ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितँय्यदायुः ॥१॥

इसके अनन्तर यजमान बाँये हाथ में जल लेकर, सीधे हाथ की (अनामिका+अंगुष्ठ मिली मुद्रा) अंगुलियों से अपने शरीर एवं पूजन-सामग्रियों पर अधो-लिखित मन्त्र बोलता हुआ जल छिड़के—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३ ॥

तदनन्तर इसी प्रकार मार्जन द्वारा अष्ट-अंग-शुद्धि करे—

मन्त्रो-यथा-ॐ आपोहिष्ठामयो भुवः ॥ १ ॥ ॐ तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ २ ॥
ॐ महेरणाय चक्षसे ॥ ३ ॥ ॐ यो वः शिवतमोरसः ॥ ४ ॥
ॐ तस्य भाजयतेहनः ॥ ५ ॥ ॐ उशतीरिव मातरः ॥ ६ ॥
ॐ तस्माऽअरंगमामवः ॥ ७ ॥ (भूमौ जल-प्रोक्षणम्)
ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥८॥ (शिरसि)ॐआपोजनयथाचनः॥९॥

पुनः यजमान नीचे-लिखे मन्त्र से शिखा-बन्धन करे—

ॐमानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ।
मानो वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

पुनः यजमान हाथ धोकर सीधे-हाथ की अञ्जली द्वारा तीन आचमन करे—

ॐ केशवाय नमः स्वाहा ॥१॥ ॐ नारायणाय नमः स्वाहा ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ माधवाय नमः स्वाहा ॥३॥ (हस्तप्रक्षालन करे) ॐगोविन्दायनमः ॥

पुनः पृथ्वी पर जल छोड़ता हुआ विनियोग पढ़े—

ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषि सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल छिड़के—

"ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वञ्च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥"

पुनः यजमान नवीन-यज्ञोपवीत धारण करने के लिये हाथ में जल लेवे और नीचे लिखा विनियोग पढ़कर जल को भूमि पर छोड़े—

ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठीऋषिः लिंगोक्तादेवता त्रिष्टुप्छंदः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ।

फिर यजमान नीचे लिखे मन्त्र द्वारा, मन्त्रों से देव-स्वरूप किये हुए शुद्ध-यज्ञोपवीत (जनेऊ) को धारण करे—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनः यजमान ३ बार आचमन कर, नीचे लिखे मन्त्र से जीर्ण-यज्ञोपवीत को कण्ठी-रूप बनाकर एवं शिर मार्ग से बाहिर निकाल कर शुद्धभूमि में त्याग देवे।

"एतावद्दिनपर्यन्तं, ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो, गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥"

इसके अनन्तर मन में १० बार गायत्री मन्त्र जपे—

ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

नीचे लिखे मंत्र से अनामिका अंगुली में कुश पवित्र धारण करे—

ॐ पवित्त्रेस्त्थो व्वैष्ष्णव्व्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण-पवित्त्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः। तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने-तच्छकेयम् ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से 'पूरक[1], कुम्भक[2], रेचक[3] क्रमसे ३ प्राणायाम करे, तीन २ बार मन में मन्त्र बोलता हुआ—

१—पूरक=सीधे हाथ की मध्यमा तथा अनामिका दोनों अँगुलियों से नाक का बाँया नथूना बन्द करके, सीधे नथूने से वायु को ऊपर चढ़ावे और मस्तक में ब्रह्माजी का ध्यान करे। क्योंकि— प्राणवायु के देने वाले ब्रह्माजी ही हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

पुनः आचार्य नीचे लिखे मन्त्र से प्रथम यजमान के मस्तक पर मंगल-तिलक करे—

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'भद्रसूक्त' पढ़े—

ॐआनो भद्राःक्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः । देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥ देवानाम्भद्रा सुमति-

---

२—कुम्भक=पुनः अँगूठे से सीधा नथूना भी बन्द कर लेवे अर्थात् दोनों नथूने बन्द करके वायु को रोके। तब हृदय में विष्णु भगवान् का ध्यान करे। कारण कि प्राणों की रक्षा विष्णु भगवान् ही करते हैं।

३—रेचक=फिर केवल दक्षिण अँगूठे से सीधा नथूना ही बन्द रक्खै और दाँये नथूने से अँगुलियां हटा लेवे और बाँये नथूने से रोकी हुई वायु को बाहर निकालता हुआ, कण्ठ में महादेवजी का ध्यान करे। कारण कि प्राणवायु निकालने (संहार) का कार्य महादेवजी का है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋ जूयतान्देवाना ७ रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवाना ७ सख्यमुपसेदिमाव्व-
यन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥ तान्पूर्व्वया निविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्र-
मदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्य्यमणं वरुण७सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मय-
स्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥ तमी-
शानंजगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्। पूषानो यथाव्वेद
सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः
स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पति-
र्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभँय्यावानो व्विदथेषुजग्मयः।
अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रं-
कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ७
सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेव हितँय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवायत्रान-
श्चक्राजरसन्तनूनाम्। पुत्रासोयत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्यारीरिषता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युर्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः । व्विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥ १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः । व्वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳशान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयंकुरु । शन्नः कुरुप्प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु ॥

फिर (यजुर्वेदोक्त) "स्वस्ति-वाचन" पढ़े—

हरिः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥१॥ पयः पृथिव्व्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ विष्णोरराट मसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥३॥ अग्निर्द्देवता व्वातो देवताऽऽसूर्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्द्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥४॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ-शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शांतिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शांतिर्व्विश्वे-देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः, शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि ॥५॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव ॥६॥ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥७॥ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳ-समिमं दधातु। व्विश्वेदेवा स ऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥ ८ ॥ ऐष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तेन सर्वमेव प्प्रतिष्ठितं भवति ॥९॥ ॐ शान्तिः ३ ॥

फिर (ऋग्वेदोक्त) "स्वस्ति-वाचन" पढ़ै—

ॐ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः। स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना ॥१॥ स्वस्तये वायु-मुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥२॥ विश्वे देवानो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुर-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिनः स्वस्तये । देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्तिनो रुद्रः पात्वंहसः ॥ ३ ॥ स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति नऽइन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अधिते कृधि ॥ ४ ॥ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि ॥ ५ ॥ स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमरिष्टनेमिं महद्भूतं वायसं देवतानाम् । असुरघ्नमिन्द्रसखं समत्सु बृहद्यशो नावमिवारुहेम ॥ ६ ॥ अंहो मुचमांगिरसं गयञ्च स्वस्त्या त्रेयम्मनसा च तार्क्ष्यम् । प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति सम्बाधेष्वभयन्नो अस्तु ॥ ७ ॥

ॐ "ऋद्धि-बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः"—इस प्रकार कहता हुआ यजमान, अक्षतों को 'स्वस्तिक-आसन' पर विराजमान श्रीगणेशजी के निकट रख देवै और हाथ जोड़ कर श्रीगणेशादि देवताओं का ध्यान करे—

आचार्य निम्नलिखित श्लोकों का पाठ पढ़े—

❋ अथ श्री गणेश वन्दना ❋

गजाननं भूत-गणाधिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद-पंकजम् ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्चविकटो, विघ्ननाशो विनायकः ॥२॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि, यः पठेच्छृणुयादपि ॥३॥
विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशो निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते ॥४॥
अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं, पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः ॥५॥
वक्रतुण्ड ! महाकाय !, कोटि–सूर्यसमप्रभ ! ।
अविघ्नं कुरु मे देव !, सर्वकार्येषु सर्वदा ॥६॥

※ अथ श्री विष्णु-वन्दना ※

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं, सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहार वक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥१॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते ! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥२॥

शुक्लाम्बरधरं देवं, शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व-विघ्नोपशान्तये ॥ ३ ॥

सर्वदा सर्व कार्येषु, नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनं हरिः ॥ ४ ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ५ ॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु, त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं, ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ ६ ॥

विनायकं गुरुं भानुं, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणौम्यादौ, सर्वकार्यार्थ-सिद्धये ॥ ७ ॥

* अथ गौरी-वन्दना *

ॐ सर्वमंगलमांगल्ये !, शिवे ! सर्वार्थसाधिके !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरण्येत्र्यम्बके ! गौरि !, नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥१॥

ॐ अथ गुरु-वन्दना ॐ

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ३ ॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ १ ॥ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ॥२॥ श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः ॥ ३ ॥ श्री शची-पुरन्दराभ्यां नमः ॥ ४ ॥ वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ माता-पितृभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इष्ट-देवताभ्यो नमः ॥ ७ ॥ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ८ ॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः ॥९॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥ १० ॥ स्थानदेवताभ्यो नमः ॥ ११ ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः ॥१२॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥१३॥ सर्वेभ्यः परमर्षिभ्यो नमः ॥१४॥ श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमो नमः ॥ १५ ॥ ॐ परब्रह्मणे नमः ॥ १६ ॥

पुनः यजमान जल-अक्षत-द्रव्य हाथ में लेकर प्रधान-संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महा-पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीये परार्द्धे, श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे-कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भरतखण्डे, भारतवर्षे, आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते (मध्यभूमौ, पुण्य-पवित्र तीर्थे, श्रीकेशवादि देवतानां सन्निधाने, श्री यमुनातीरे, मथुरामण्डले, आदिवाराहभूतेश्वरक्षेत्रे) श्री बौद्धावतारे, मर्यादापुरुषोत्तमश्रीरामराज्ये, श्री विक्रमादित्यराज्यतोऽमुकसंख्याकेऽमुकनाम्नि सम्वत्सरे, श्री सूर्येऽमुकायनेऽमुकगोलावलम्बिते, श्री गगनचक्रचूड़ामणावमुकतौ, सन्मांगल्यप्रदेऽमुक मासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे, प्रवर्तमानेऽमुकनक्षत्रेऽमुकराशिस्थिते शशांकेऽमुक राशिस्थिते श्रीमार्त्तण्डेऽमुक राशिस्थिते श्रीदेवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु, एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभ-तिथौ, अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक प्रवरोऽमुक शाखाऽध्यायी, अमुकनाम (शर्मा-वर्मा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुप्तोऽहं) मम सकुटुम्बस्य सर्वापच्छान्तिपूर्वकमायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, सर्वारिष्ट-निवारणार्थमखण्ड-लक्ष्मी-प्राप्त्यर्थञ्च (अमुकमन-कामना सिद्ध्यर्थं) श्री गणपत्यादि-देवतानां पूजनमहं करिष्ये।

पुनः यजमान नीचे-लिखे मन्त्र से हाथ जोड़कर देवताओं से प्रार्थना करे—

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति।
दूरंगमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

यजमान दोनों हाथ जोड़कर श्री गणेश जी का ध्यान करे—

अथ ध्यानम्—उच्चैर्ब्रह्माण्डखण्डद्वितयसहचरं कुम्भयुग्मं दधानं, प्रेङ्खं नागारिपक्षप्रतिभटविकटश्रोत्रतालाभिरामम्। देवं शम्भोरपत्यं भुजगपतितनु-स्पर्धिवर्धिष्णुहस्तं, ध्याये पूजार्थमीशं गणपतिममलं धीश्वरं कुञ्जरास्यम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, सिद्धिबुद्धिसहितश्रीमन्महागणाधिपतये नमः ध्यायामि॥

यजमान हाथ में रोली, चावल तथा रक्त-पुष्प लेकर नीचे लिखे मन्त्र से श्री गणेशजी का आवाहन-स्थापन करे और अक्षतादि गणेशजी के साँतिये पर रक्खे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ वेदोक्त गणेशमन्त्रः—ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः। ऋद्धि-बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः=आवाहयामि, स्थापयामि॥

पुनः यजमान निम्नलिखित मन्त्र से 'श्रीगणेशप्रतिष्ठापन' के लिये रक्ताक्षत गणेशजी के सांतिये पर या अष्टदल कमल पर रक्खे—

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो ँ ३ म्प्रतिष्ठ॥

❋ अथ वेदोक्तदेव-पूजनमन्त्राः ❋

नीचे-लिखे मन्त्र से देवताओं को 'आसन' देवै—

ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति॥ (दिव्यमासनं-समर्पयामि)॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को 'पाद्य' देवै—

ॐ एतावानस्य महिमातोज्ज्यायाँश्च्च पुरुषः। पादोस्य व्विश्श्वा भूतानि त्त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥ (पादयोः पाद्यं समर्पयामि) ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को 'अर्घ' देवे—

ॐ धामन्ते व्विश्श्वम्भुवनमधिश्शितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम: मधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥ (हस्तयोरर्घं समर्पयामि) ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "आचमन" देवै—

ॐ इमम्मे व्वरुणश्श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥

(मुखे आचमनीयं समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "दूध से स्नान" करावे—

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ (पयः स्नानं समर्पयामि)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पयः स्नानान्ते–शुद्धोदकं स्नानीयं[1] समर्पयामि ।
(पुनः शुद्धोदक स्नानान्ते–आचमनीयं-समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "दही से स्नान" करावे—

ॐ दधिक्राव्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ण्णोरश्श्वस्य व्वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ँ षितारिषत् ।।

(दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते—शुद्धोदकंस्नानीयं समर्पयामि ।
पुनः शुद्धोदक स्नानान्ते—आचमनीयं-समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "घी से स्नान" करावे—

ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्श्रितो घृतम्म्वस्य धाम ।
अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्व्यम् ।।

(घृत स्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते–शुद्धोदकंस्नानीयं समर्पयामि ।
पुनः शुद्धोदक स्नानान्ते–आचमनीयं-समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "शहद से स्नान" करावे—

---

१. स्नातुं योग्य स्नानीयं, वा स्नपयामि=निल्हाता हूँ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ मधु व्वाताऽऋतायतेमधु क्षरन्न्ति सिन्धवः। माद्ध्वीन्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्त्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः। माद्ध्वीर्ग्गावो। भवन्तु नः ॥ स्वाहा मरुद्भिः परिश्रीयस्वदिवः स ँ स्पृशस्प्पाहि। मधु मधु मधु ॥

(मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते-शुद्धोदकं स्नानीयं समर्पयामि। पुनः शुद्धोदकस्नानान्ते—आचमनीयं समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "शर्करा" से स्नान करावे—

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं व्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ (शर्करा स्नानं समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को तीर्थ-जल से "शुद्धोदक स्नान" करावे—

ॐ आपो हिष्ठ्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥

(अथवा)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Grant-2

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् । पशूँ स्ताँश्चचक्क्रे व्वाय-व्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्चचये ॥

(शुद्धोदक स्नानीयं समर्पयामि । पुनराचमनीयं समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "अधो-वस्त्र" प्रदान करे—

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः ।
त धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

(अधो वस्त्रं समर्पयामि । पुनराचमनीयं समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से "उप-वस्त्र" प्रदान करे—

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः ।
व्वासोऽअग्ग्ने विश्श्वरूप ᳬ सम्व्ययस्व व्विभावसो ॥

(उपवस्त्रं समर्पयामि, पुनराचमनीयं समर्पयामि) ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से "जनेऊ" चढ़ावे—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(यज्ञोपवीतं समर्पयामि, पुनराचमनीयं समर्पयामि) ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं पर "केशर-चन्दन" चढ़ावे—

ॐ त्वां गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्हबृस्प्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्द्वान्न्यक्ष्मादमुच्चयत ॥
(चन्दनं विलेपयामि, अबीरं-गुलालं-हरिद्राचूर्णञ्च समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से अक्षत[1] (चावल) चढ़ावे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियाऽअधूषत । अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मती योजा न्न्विन्द्र ते हरी ॥ (अक्षतान् समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं पर "सुगन्धित-फूल" इत्र आदि चढ़ावे—

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः । (पुष्पाणिसमर्पयामि, पुष्पमालाञ्च समर्पयामि, नाना सुगन्धिद्रव्याणि समर्पयामि)

यजमान नीचे लिखे मन्त्र द्वारा देवताओं को "सौभाग्य द्रव्य" देवे, (तथा देवियों की

१. न क्षतः अक्षतः (पूजा में टूटे हुए चावल नहीं होने चाहिए) ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूजा में निम्नलिखित मन्त्र द्वारा ही "मेंहदी, महावर, हींगुर, चूड़ी आदि" भेंट करे—

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्यायाहेतिम्परिबाधमानः । हस्तग्घ्नो व्विश्वावयुनानिव्विद्वान्पुमान्पुमा ॐ सम्परिपातु व्विश्वतः ॥

(सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि)

यजमान नीचे लिखे मन्त्र द्वारा गणेशजी पर "दूब" चढ़ावे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहुस्रे ण शतेन च ॥ (ॐ भू र्भु वःस्वः । सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दूर्वांकुरान् समर्पयामि)

यजमान नीचे लिखे मन्त्र द्वारा शंकरजी पर "बेलपत्र" चढ़ावे—

ॐ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरुथिने च नमः । श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च नमो धृष्ष्णवे ॥ ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रञ्च त्रिरायुधम् । त्रिजन्मपापसंहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ (बिल्वपत्रं-समर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "सुगन्धित-धूप" प्रदान करे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्म्मान्धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसिवह्निनतम ँ सस्निनतमम्पप्रतिमञ्जुष्ट्टतमन्देव-हूतमम् ॥ (सुगन्धियुक्तं धूपमाघ्रापयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को साक्षीः स्वरूप "दीपक" दिखावे–

ॐ अग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्य्यो ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा, सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योति-र्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा ॥

(प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र के द्वारा देवताओं को विविध प्रकार के नैवेद्य "भोग" निवेदन करे–

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षँशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ २ ऽ अकल्प्पयन् ॥ (नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यं पुरतः कृत्वा गन्धपुष्पे प्रक्षिप्य, ग्रासमुद्रां धेनुमुद्राञ्च प्रदर्श्य-(१) प्राणाय स्वाहा, (२) अपानाय स्वाहा, (३) समानाय स्वाहा, (४) उदानाय स्वाहा, (५) व्यानाय स्वाहा, मध्ये-मध्ये आचमनीयमुत्तरापोशनं,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुख-प्रक्षालनम्, पुनर्हस्तप्रक्षालनार्थं जलञ्च समर्पयामि, करोद्वर्तनार्थं पुनर्गन्धं समर्पयामि) ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं को "लौंग-इलायची-सुपाड़ी युक्त १ पान" अर्पण करे—

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो स्यासीदाज्ज्यङ् ग्रीष्म-ऽइध्मः शरद्धविः। (मुख वासार्थे लवंगादि युक्तं ताम्बूलं समर्पयामि)

पुनः निम्नलिखित मन्त्र द्वारा देवताओं को "श्रीफल-ऋतुफल-सुपाड़ी" अर्पण करे—

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसू-तास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ॥ (नारिकेलादि फलानू निवेदयामि)

पुनः निम्नलिखित मन्त्र द्वारा देवताओं को "हिरण्यादि-दक्षिणा" अर्पण करे—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमांकस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे,-यथाशक्ति हिरण्य-युक्तं द्रव्यं, दक्षिणाञ्च समर्पयामि)

(नमस्कारं समर्पयामि)

पुनः निम्नलिखित मन्त्र से देवताओं की "कर्पूरयुक्त आरती" उतारे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चचक्षोःसूर्य्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्चच प्राण-श्चच मुखादग्निरजायत ।। (आरार्तिकंसमर्पयामि, अर्घ्यञ्चसमर्पयामि)

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से देवताओं की परिक्रमा करे—

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः। तेषा ᳪ सहस्रयोजने वधन्न्वानि तन्मसि ।। (प्रदक्षिणां समर्पयामि) ।।

पुनः निम्नलिखित मन्त्र से देवताओं को "मन्त्र-पुष्पांजलि" भेंट करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्। ते हनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ।। (मन्त्र पुष्पांजलि-न्नमस्कारञ्च समर्पयामि। ततो विशेषार्घ्यं समर्पयामि। अनेन पूजनेन गणपत्यादि देवताः प्रीयन्ताम्) ।।

* अथ द्वादश-विनायक पूजनम् *

यजमान सर्व-प्रथम हाथ जोड़कर १२ विनायकोंका ध्यान करे। तदनन्तर निम्नलिखित नाम-मन्त्रों से अपने बाँये हाथ में पुष्प एवं कुमकुमाक्षत रखकर, सीधे हाथ से प्रत्येक के आसनों पर यथास्थान 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहता हुआ अक्षत आदि छोड़ता जाय—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ द्वादश विनायक आसनम्

१	२	३
४	५	६
७	८	९
१०	११	१२

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः—सेनाभ्यः ॥ (ध्यायामि) ॥

श्री गणपत्यादि द्वादश विनायकेभ्यो नमः ॥

१ मार्गशीर्षे—ॐ गणपतये नमः । गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

२ पौषे— ॐ विनायकाय नमः । विनायकमावा० स्था० ।

३ माघे— ॐ गजवक्त्राय नमः । गजवक्त्रमावा० स्था० ।

४ फाल्गुने— ॐ भालचन्द्राय नमः । भालचन्द्रमावा० स्था० ।

५ चैत्रे— ॐ उपेन्द्राय नमः । उपेन्द्रमावा० स्था० ।

६ वैशाखे— ॐ विघ्नविनाशाय नमः । विघ्नविनाशमावा स्था० ।

७ ज्येष्ठे— ॐ शिवसुताय नमः । शिवसुतमावा० स्था० ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८ आषाढ़े– ॐ हरिनन्दनाय नमः। हरिनन्दनमावा० स्था०।

९ श्रावणे– ॐ हेरम्बाय नमः। हेरम्बमावा० स्थापयामि।

१० भाद्रपदे– ॐ लम्बोदराय नमः। लम्बोदरमावा० स्था०।

११ आश्विने- ॐ कार्तवीर्याय नमः। कार्तवीर्यमावा० स्था०।

१२ कार्त्तिके- ॐ महावीर्याय नमः। महावीर्यमावा० स्था०।

ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंयज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्श्वेदेवा सऽइह मादयन्तामों ꣳ प्प्रतिष्ट्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥ सुप्रतिष्ठिताः भवत॥ द्वादश-विनायकानावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि।

तदनन्तर यजमान षोडशोपचार पूजन करे—

॥ ततः ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि, हस्तयोरर्घ्यं समर्प०, सर्वांगे स्नानीयं समर्प०, पञ्चामृतस्नानं समर्प०, शुद्धोदकस्नानं समर्प०, मुखे आचमनीयं समर्प०, पुनराचमनीयं समर्प०, वस्त्रोपवस्त्रार्थे वस्त्रं (यज्ञसूत्रं वा समर्पयामि)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञोपवीतं समर्प०, पुनराचमनीयं समर्प०, गन्धं समर्प०, गन्धान्ते ऽक्षतान्समर्प०, अबीरं गुलालं हरिद्राचूर्णञ्च समर्प०, सौभाग्य द्रव्याणि समर्प०, सिंदूरं समर्प०, नानासुगन्धिद्रव्याणि समर्प०, पुष्पाणि समर्प०, दूर्वांकुराणि समर्प०, (दूर्वान्ते) धूपमाघ्रापयामि, प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि, नैवेद्य निवेदयामि, नैवेद्यं पुरतः कृत्वा, गन्ध-पुष्पे प्रक्षिप्य, 'ग्रासमुद्रां-धेनुमुद्राञ्च'-प्रदर्श्य, १ प्राणाय स्वाहा, २ अपानाय स्वाहा, ३ समानाय स्वाहा, ४ उदानाय स्वाहा, ५ व्यानाय स्वाहा, मध्ये-मध्ये आचमनीयम्, उत्तरापोषणम्, मुख-प्रक्षालनम्, हस्त प्रक्षालनम्, करोद्वर्तनार्थे पुनर्गन्धं समर्प०, मुखवासनार्थे ताम्बूलं-पूगीफलं समर्प०, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे यथाशक्ति–द्रव्यं दक्षिणां समर्प० ॥

॥ पुनः ॥ आरार्त्तिकमर्घ्यञ्च समर्प०, प्रदक्षिणाञ्च समर्प०, विशेषार्घ्य-नमस्कारं समर्पयामि ॥ इति श्री गणपतिपूजनम् ॥

✻ अथ कलशस्थापन एवं पूजन-प्रयोग विधिः ✻

यजमान नीचे लिखे मन्त्र से पृथ्वी का स्पर्श करे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः ॥१॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से अष्टदल-कमल पर यव-प्रक्षेप करे—

ॐ औषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्स्म्मै कृणोति ब्ब्राह्मणस्त ᳪ राजन्न्पारयामसि ॥ २ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से अष्टदल-पद्म के ऊपर कलश को स्थापित करे—

ॐ आजिग्घ्रकलशम्मह्यात्त्वाऽविशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्र-न्धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्रयिः ॥ ३ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में जल डाले—

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ ४ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में गंगा-जल, यमुना-जल अथवा तीर्थ-जल डाले—

ॐ इमम्मे गंगे यमुने सरस्स्वति शुतुद्द्रिस्तोमेसचतापरुष्ण्ण्या मरुद्वृधेवितस्त-यार्ज्जीकीये श्रृणुह्यासुषोमया ॥ ५ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश पर चन्दन (रोली) चढ़ावे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ त्वां गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्यत ॥ ६ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में धान्य डाले—

ॐ धान्न्यमसिधिनुहिदेवान्प्राणायत्त्वोदानायत्त्वाव्व्यानायत्त्वा। दीर्घामनुप्प्रसितिमायुषेधान्न्देवोवः सविता हिरण्ण्य पाणिः। प्प्रतिगृब्भ्णात्वच्छिद्द्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥ ७ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में सर्वौषधि डाले—

ॐ याऽओषधीः पूर्व्वाजाता देवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनुबब्भ्रूणा मह ᳪ शतन्धामानि सप्प्त च ॥ ८ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में दूब के अंकुर डाले—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानोदर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ ९ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में कुशा डाले—

ॐ पवित्त्रेस्थो व्वैष्णव्व्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्द्रेण पवित्त्रेण सूर्य्य-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् १०

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश पर पञ्च-पल्लव रक्खे—

ॐ अश्वत्थेवो निषदनम्पर्णेवो व्वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥११॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में सप्त-मृत्तिकाएँ डाले—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ॥ १२ ॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में एक सुपाड़ी डाले तथा श्रीफल चढ़ावे—

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ँ हसः ॥१३॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में पञ्च-रत्न डाले—

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानिदाशुषे ॥१४॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश में स्वर्ण डाले—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश के ऊपर चावलों से भरा हुआ एक काँसे का कटोरा रक्खे—

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्ण्णा पुनरापत ।
व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जं ँ शतक्क्रतो ॥१६॥

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से कलश पर वस्त्रोपवस्त्र चढ़ावे और कलाये के सूत्र से अथवा जनेऊ से कलश के कण्ठ को बाँधे—

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः ।
तं धीरा सः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥१७॥

पुनः यजमान नीचे लिखे मन्त्र से अपने दक्षिण हाथ में कुमकुमाक्षत रखकर वरुणदेव का आवाहन करे—

ॐ तत्त्वायामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥१८॥

तदनन्तर यजमान 'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' कहकर कलश पर उन चावलों को छोड़े और 'ॐमनो जूति' (पूर्व लिखित) मन्त्र द्वारा श्री वरुणदेव की 'प्रतिष्ठा' करे। पुनः यजमान 'पूजयामि' ऐसा कहकर पूर्व लिखित विधि-अनुसार 'षोडशोपचार' पूजन करे। अन्त में हाथ जोड़कर कलशस्थ-श्री वरुणदेव तथा देव-स्वरूप कलश को नमस्कार करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यजमान अपने दाहिने हाथ की अनामिका-अंगुली से कलश का स्पर्श करे और आचार्य नीचे लिखे श्लोकों को पढ़े—

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः, सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे, कलशाम्बु-समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री, शांतिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु मम शान्त्यर्थं, दुरितक्षयकारकाः।
गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति॥
नर्मदे सिन्धु कावेरि, जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

(कलशे वरुणाय नमः)

पुनः यजमान हाथ जोड़कर कलशस्थ वरुण-देवता का नीचे लिखे श्लोक से ध्यान करता हुआ नमस्कार करे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❁ अथ वरुण-देव ध्यानम् ❁

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ १ ॥

पुनः आचार्य यजमान के द्वारा वरुणदेव का विधिवत् 'षोडशोपचार-पूजन' करावे ।

॥ इति कलश-पूजनं समाप्तम् ॥

अथ पंचोंकार पूजनम्

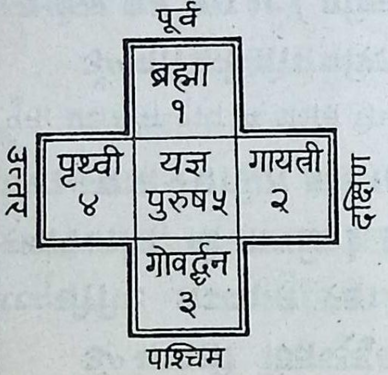

✻ अथ पंचोंकार पूजनम् ✻

यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'ब्रह्माजी' का ध्यान करे–

ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः । सबुध्न्या उपमाऽअस्य व्विष्ठ्ठाः सतश्च्च योनिमसतश्च्च व्विवः ॥ (पूर्वे श्रीब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि । भो ब्रह्मन् ! इहागच्छ इहातिष्ठ)–ऐसा कहकर अक्षतों को (१) यथा-स्थान स्थापित करे ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'गायत्री' का ध्यान करे—

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह । बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ।। (दक्षिणे गायत्र्यै नमः, गायत्रीमावाहयामि-स्थापयामि, भो गायत्रि ! इहागच्छ इहातिष्ठ)—ऐसा कहकर अक्षतों को (२) यथा-स्थान स्थापित करे ।।२।।

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'गोवर्द्धन' का ध्यान करे—

ॐ गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता । समधात ँ सरस्वत्या स्वाहेन्द्र सुतं मधु ।। (पश्चिमे गोवर्द्धनाय नमः, गोवर्द्धनमावाहयामि-स्थापयामि, भो गोवर्द्धन ! इहागच्छ इहातिष्ठ)—ऐसा कहकर अक्षतों को (३) यथा-स्थान स्थापित करे ।।३।।

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'पृथ्वीदेवी' का ध्यान करे—

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः ।। (उत्तरे, पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि-स्थापयामि, भो पृथिवि ! इहागच्छ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहातिष्ठ)-ऐसा कहकर अक्षतों को (४) यथास्थान स्थापित करे ॥४॥

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'यज्ञ-पुरुष' का ध्यान करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । तेहनाकम्म-हिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्तिदेवाः ॥ (मध्ये, यज्ञपुरुषाय नमः, यज्ञ पुरुषमावाहयामि-स्थापयामि, भो यज्ञपुरुष ! इहागच्छ इहातिष्ठ)-ऐसा कहकर अक्षतों को (५) यथा-स्थान स्थापित करे ॥५॥

पुनः 'मनो जूतिः०'—इस मन्त्र द्वारा पञ्चोंकार देवताओं की प्रतिष्ठा करे और पूजयामि' कहकर पूर्व-लिखित विधि-अनुसार षोडशोपचार पूजन करे । पुनः यजमान नीचे-लिखे मन्त्र से हाथ जोड़कर नमस्कार करे—

ॐ कारं ब्रह्मरूपाख्यं, ध्यायन्ति मुनयः सदा ।
सिद्धिदं मुक्तिदं चैव, ओंकाराय नमो नमः ॥१॥

(ॐ ब्रह्मादि पंचोंकार देवताभ्यो नमः)

॥ इति पञ्चोंकार देवता पूजनं समाप्तम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* अथ सप्तर्षि पूजनम् *

अथ सप्तर्षि आसनम

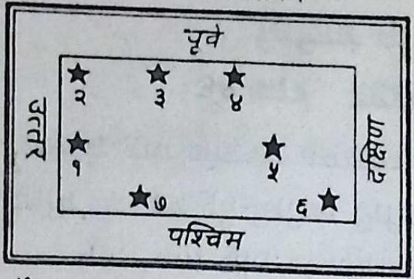

यजमान प्रथम सप्तर्षियों का ध्यान करे—

कश्यपात्रिभरद्वाजं, विश्वामित्रञ्च गौत्तमम् ।
जमदग्निं वसिष्ठञ्च, प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

पुनः आचार्य निम्नलिखित नाम-मन्त्रों को बोले, और यजमान 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहता हुआ, अपने बाँये हाथ में पुष्पाक्षत रखकर सीधे-हाथ से यथा-स्थान छोड़ता जाय—

ॐ सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सद म प्रमादम् ।
सप्तापः स्वतो लोकमीयुस्तत्र जाग्रतोऽअस्वप्नजौ सत्र सदौ च देवौ ॥

१ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ गौत्तमाय नमः । गौतममावाहयामि स्थापयामि ।
२ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ भरद्वाजाय नमः । भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि ।
३ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ विश्वामित्रायनमः । विश्वामित्रमावा० स्थापयामि ।
४ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ कश्यपाय नमः । कश्यपमावाहयामि स्थापयामि ।
५ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ जमदग्नये नमः । जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ वसिष्ठाय नमः । वशिष्ठमावाहयामि स्थापयामि ।
७ ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ अत्रये नमः । अत्रिमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐसप्तर्षिभ्योनमः। पुनः आचार्य 'मनोजूति'-इस मंत्रसे सप्तर्षियोंकी प्रतिष्ठा कराके, पूर्वोक्त-विधिसे यजमानसे-'षोडशोपचार' पूजन करावे तथा सप्तर्षियोंको नमस्कार कराके विशेषार्घ्य दिवावे।

अथ सप्त घृत मातृका चितम्

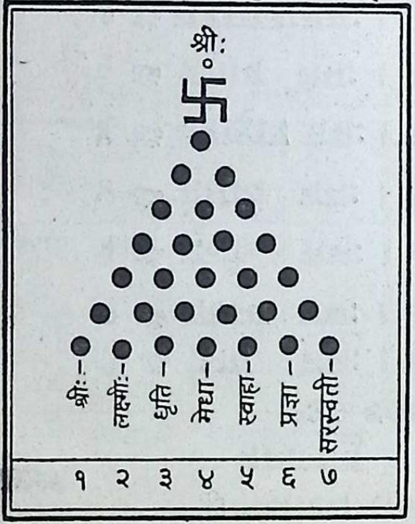

❋ अथ सप्तघृत-मातृका पूजनम् ❋

यजमान प्रथम हाथ जोड़कर ७ घृत-मातृकाओं का ध्यान करे। तदनन्तर 'निम्नलिखित' नाम-मन्त्रों से अपने बाँये-हाथ में पुष्प एवं कुमकुमाक्षत रखकर, सीधे हाथ से प्रत्येक के आसनों पर 'आवाहयामि-स्थापयामि'-यह कहता हुआ अक्षत-आदि छोड़ता जाय—

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वं लोकम्मऽइषाण ॥ (ध्यायामि) ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❀ "श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते, सप्तैता घृतमातरः ॥"

ॐ श्र्यादिसप्तघृत-मातृकाभ्यो नमः ।

१ ॐ श्रियै नमः । श्रियमावाहयामि स्थापयामि ।
२ ॐ लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ।
३ ॐ धृत्यै नमः । धृतिमावाहयामि स्थापयामि ।
४ ॐ मेधायै नमः । मेधामावाहयामि स्थापयामि ।
५ ॐ स्वाहायै नमः । स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ।
६ ॐ प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि ।
७ ॐ सरस्वत्यैनमः । सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मनोजूतिः-इस मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठापन करे। तदनन्तर नीचे-लिखे मन्त्र से क्रमशः ७ वसोर्धाराएें (घी की धाराएें) करे—

आचार्य प्रथम गोबर और हल्दी से भीत (दीवार) को चौकोर लिपवा कर अथवा किसी पट्टा पर सिन्दूर और शुद्ध घी से "सप्त घृत-मातृकाओं" की चित्रानुसार रचना करे तथा मन्त्र सहित ७ सप्त-वसोर्धाराएें करके सवा-किलो ऽ१। गुड़-घी का नैवेद्य देवे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्त्र-धारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्वा ॥

तदनन्तर-"ॐ कामधुक्ष" मन्त्र कहता हुआ सिन्दूर-बिन्दुओं पर गुड़ घी लगावे और कलाया लगावे । पुनः यजमान ७ सप्तघृत-मातृकाओं का पूर्व-विधि-अनुसार 'षोडशोपचार' पूजन करे । और 'ॐ श्रीश्च्चते०' इस उपरोक्त मन्त्र द्वारा नमस्कार करे ।

॥ इति सप्तघृत मातृका पूजनं समाप्तम् ॥

अथ षोडश मातृका आसनम्

आत्मनः कुलदेवता १६	लोकमातरः १२	देव-सेना ८	मेधा ४
तुष्टि. १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टि १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी-गणेश १

※ अथ षोडश-मातृका पूजनम् ※

यजमान प्रथम हाथ जोड़कर १६ मातृकाओं का ध्यान करे । तदनन्तर 'निम्नलिखित' नाम-मन्त्रों से अपने बाँये-हाथ में पुष्प एवं कुमकुमाक्षत रखकर सीधे-हाथ से प्रत्येक के आसनों पर यथा स्थान 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहता हुआ अक्षत-आदि छोड़ता जाय—

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्न्मातरम्पुरः ।
पितरंचप्प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके नमानयति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कश्चन। ससस्त्यशवकः सुभद्रिद्रकाङ्कास्पोलवासिनीम् ॥ (ध्यायामि) ॥

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥
ॐ गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः।

१ ॐगंगणपतयेनमः, गणपतिमावा० स्था०। ॐगौर्यै नमः, गौरीमावा० स्था०।
२ ॐपद्मायैनमः, पद्मामावा०स्था०। ३ ॐशच्यैनमः, शचीमावा० स्था०।
४ ॐमेधायैनमः, मेधामावा०स्था०। ५ ॐसावित्र्यैनमः, सावित्रीमावा०स्था०।
६ ॐविजयायैनमः, विजयामा० स्था०। ७ ॐजयायैनमः, जयामावा० स्था०।
८ ॐदेवसेनायैनमः, देवसेनामावा०स्था०। ९ ॐस्वधायैनमः, स्वधामा० स्था०।
१० ॐस्वाहायैनमः, स्वाहामावा० स्था०। ११ ॐमातृभ्योनमः, मातृरावा०स्था०।
१२ ॐलोकमातृभ्योनमः,लोकमातृरावा०स्था। १३ ॐधृत्यैनमः,धृतिमावा०स्था०।
१४ ॐ पुष्ट्यैनमः, पुष्टिमावा० स्था०। १५ ॐ तुष्ट्यैनमः, तुष्टिमावा० स्था०।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१६ ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः। आत्मनः कुलदेवतामावा० स्था०।

'ॐ मनो जूति०' इस मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठापन करके यजमान १६ मातृकाओं का पूर्व-विधि से 'षोडशोपचार पूजन करे। पुनः 'ॐ अम्बेऽअम्बिके' इस उपरोक्त मन्त्र से नमस्कार करे।

* अथ नव-ग्रह पूजन प्रारम्भः *

यजमान हाथ जोड़कर सूर्यादि नव-ग्रहों का ध्यान करे—

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

तदनन्तर यजमान सूर्य का ध्यान करता हुआ, अपने दक्षिण-हाथ में जल लेकर निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और उस विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐ आकृष्णेनेति मन्त्रस्य, हिरण्यस्तूपांगिरस ऋषिः, सूर्यो देवता, त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यप्रीतये-पूजने (जपे) विनियोगः।

पुनः यजमान हाथ में (स्वर्ण-रक्त-कमल-पुष्प) कुमकुम-अक्षत-लेकर निम्नलिखित 'सूर्य मंत्र, द्वारा सूर्यदेव को 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहकर अक्षत आदि यथास्थान स्थापित करे—

सूर्य-मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ ॥ घृणिः सूर्याय नमः ॥ १ ॥

• तत्र पूजार्थ सूर्यादि नव-ग्रहमंडलमिदम् •

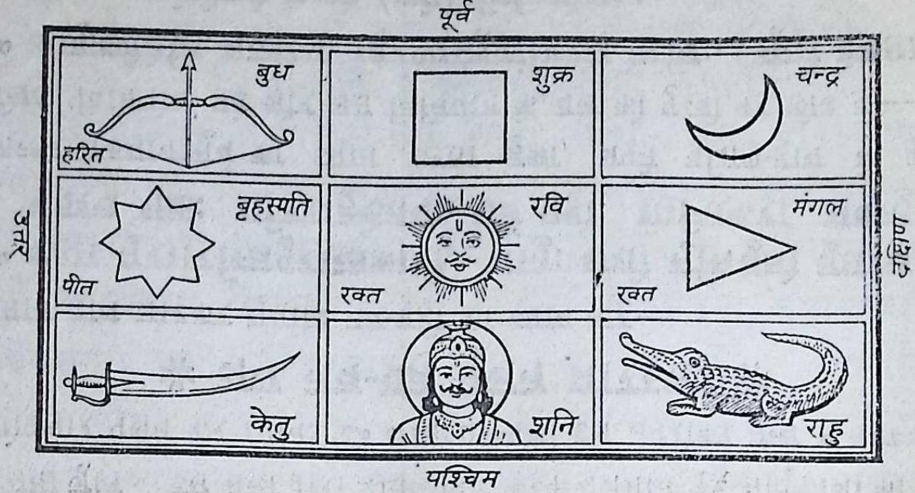

स्कन्दपुराणे-शुक्रार्कौ प्राङ् मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्यावुदङ् मुखौ। प्रत्यङ् मुखः शनिः सोमः, शेषा दक्षिणतोमुखा ।१।
आदित्याऽभिमुखाः सर्वे, साधिप्रत्यधिदेवताः। स्थापनीया मुनिश्रेष्ठा, नान्तरेण पराङ् मुखाः ।२।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदनन्तर यजमान 'चन्द्रमा' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐ 'इमन्देवा'—इति मन्त्रस्य, वरुण-ऋषिः, अग्निर्देवता, अत्यष्टी छन्दः सोमप्रीतये-पूजने (जपे) विनियोगः ।

पुनः यजमान हाथ में (चाँदी-श्वेत-पुष्प) अक्षत लेकर, निम्नलिखित 'चन्द्रमन्त्र' द्वारा चन्द्रदेव को 'आवाहयामि स्थापयामि' कहकर अक्षत आदि यथास्थान स्थापित करे—

चंद्र-मंत्र-ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः ॐ भू भुंवः स्वः ॐ इमन्देवाऽअसपत्न ᳪ सुवद्ध्-वम्महते क्षत्रायमहते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्त्रममुष्यै पुत्त्रमस्यै व्विशऽएषवोमी राजा सोमोस्म्मा-कम्ब्राह्मणाना ᳪ राजा । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः श्रौं श्रीं श्रां ॐ ॥ सों सोमाय नमः ॥ २ ॥

तदनन्तर यजमान 'मंगल' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐअग्निर्मूर्धा-इति मन्त्रस्य, विरूपाक्षांगिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्दः, भौमप्रीतये–पूजने (जपे) विनियोगः ।

पुनः यजमान हाथमें (ताम्र-कण्हेर पुष्प, लाल मूंगा) तथा अक्षत लेकर, नीचेलिखे 'मंगल-मंत्र' द्वारा मंगलदेव को 'आवाहयामि-स्थापयामि'-कहकर अक्षत आदि यथास्थान स्थापित करे–

मंगल-मंत्र-ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपाᳬरेताᳬसि जिन्वति ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ क्रौं क्रीं क्रां ॐ । अं अंगारकाय नमः ॥ ३ ॥

तदनन्तर यजमान 'बुध' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े, और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐ उद्बुध्यस्व-इति मन्त्रस्य, परमेष्ठी-ऋषिः, बुधोदेवता, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधप्रीतये–पूजने (जपे) विनियोगः ।

पुनः यजमान हाथ में (काँस्य-हरित पुष्प) अक्षत लेकर, निम्नलिखित 'बुध' मन्त्र द्वारा बुधदेव को 'आवाहयामि-स्थापयामि'-कहकर अक्षत आदि यथास्थान स्थापित करे—

बुध-मंत्र-ॐ व्रां व्रीं व्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ग्ने प्प्रतिजागृहि त्त्वमिष्टापूर्त्तेस ᳬ सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअद्ध्युत्तरस्मिन्-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्विश्वेदेवा यजमानश्च्च सीदत। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः व्रौं व्रीं व्रां ॐ। बुं बुधाय नमः ॥ ४ ॥

तदनन्तर यजमान 'बृहस्पति' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐ बृहस्पति——इति मन्त्रस्य, गृत्समदर्षिः, ब्रह्मादेवता, त्रिष्टुप्छन्दः, बृहस्पति प्रीतये-पूजने (जपे) विनियोगः।

पुनः यजमान हाथमें (स्वर्ण-पीत पुष्प)हल्दो-मिश्रित-अक्षत लेकर, निम्नलिखित-वृहस्पति मंत्र द्वारा गुरुदेव को 'आवाहयामि'-स्थापयामि'-कहकर अक्षतादि यथास्थान पर चढ़ावे—

बृहस्पति-मंत्र-ॐ ह्राँ ह्रीँ, ह्रौँ, सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ बृहस्पतेऽअतियद-र्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्र-जाततदस्म्मासुद्द्रविणन्धेहि चित्त्रम्॥ ॐ स्वः भुवः भूः सः ॐ ह्रौं ह्रीँ ह्राँ ॐ। बृं बृहस्पतये नमः॥ ५ ॥

तदनन्तर यजमान 'शुक्र' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ अन्नात्परिस्रत-इति मन्त्रस्य, प्रजापतिर्ऋषिः, अश्विव-सरस्वतीन्द्रा देवताः, अतिजगतीछंदः शुक्रप्रीतये-पूजने (जपे) विनियोगः ।

पुनः यजमान हाथ में (चाँदी-श्वेत पुष्प) अक्षत लेकर, निम्नलिखित 'शुक्र मंत्र' द्वारा शुक्रदेव को 'आवाहयामि-स्थापयामि कहकर अक्षत-आदि यथास्थान स्थापित करे—

शुक्र-मंत्र-ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः ॐभूर्भुवः स्वः ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणा-व्व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान ँशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः द्रौं द्रीं द्रां ॐ ॥ शुं शुक्राय नमः ॥ ६ ॥

तदनन्तर यजमान 'शनैश्चर' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐ शन्नोदेवीरितिमन्त्रस्य, दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः, आपो देवता, गायत्री-छन्दः, शनैश्चर प्रीतये—पूजने (जपे) विनियोगः ।

पुनः हाथ में (लोह-कृष्ण पुष्प) काले उड़द लेकर, निम्नलिखित 'शनि-मन्त्र' द्वारा शनिदेव को 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहकर काले उड़द यथास्थान स्थापित करे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनि-मन्त्र-ॐ खाँ खीँ खौँ सः ॐभूर्भुवः स्वः। ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआ-पोभवन्तु पीतये। शँय्योरभिस्रवन्तु नः॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौँ खीँ खाँ ॐ॥ शं शनैश्चराय नमः॥ ७॥

तदनन्तर यजमान 'राहु' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

ॐ कयानश्चित्र-इति मन्त्रस्य, वामदेव-ऋषिः, राहुर्देवता, गायत्रीछन्दः, राहुप्रीतये-पूजने (जपे) विनियोगः।

पुनः यजमान हाथ में (लोह-कृष्ण पुष्प) काले उड़द, तिल लेकर, निम्नलिखित 'राहु-मन्त्र' द्वारा राहुदेव को 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहकर तिल-माषादि यथास्थान चढ़ावे-

राहु-मन्त्र-ॐभ्राँ भ्रीँ भ्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौँ भ्रीँ भ्राँ ॐ॥ रां राहवे नमः॥ ८॥

तदनन्तर यजमान 'केतु' का ध्यान करता हुआ, हाथ में जल लेकर, निम्नलिखित 'विनियोग' पढ़े और विनियोग के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ केतुङ्कृण्वन्निति मन्त्रस्य, मधुच्छन्दाऋषिः, केतुर्देवता, (अनिरुक्ता) गायत्री छन्दः, केतुप्रीतये-पूजने (जपे) विनियोगः।

पुनः यजमान हाथ में (लोह-कृष्ण पुष्प) काले उड़द-तिल लेकर, निम्नलिखित 'केतु-मंत्र, द्वारा केतु देवताको 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहकर तिल-माषादि यथास्थान चढ़ावे–

केतु-मन्त्र-ॐ प्राँ प्रीँ प्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ केतुङ्कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ ॐस्वः भुवः भूः ॐसः प्रौँ प्रीँ प्राँ ॐ ॥ कें केतवेनमः ॥९॥ सूर्य्यादि नव-ग्रहमण्डलदेवताभ्यो नमः।

'आवाहयामि-स्थापयामि' इस प्रकार नव ग्रहों का 'आवाहन-स्थापन' करके यजमान पुनः अपने बाँये-हाथ में अक्षतों को रक्खे और सीधे हाथ से निम्नलिखित नाम-मन्त्रों द्वारा 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहता हुआ यथा-स्थान छोड़ता जाय–

* अथाधिदेवताऽऽवाहनम् *

१ सूर्यस्य दक्षिण-पार्श्वे-ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वरमावाहयामि, स्थापयामि।
२ चन्द्रस्य ,, ,, ॐ उमायै नमः। उमामावाहयामि, स्थापयामि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३ भौमस्य दक्षिण-पार्श्वे-ॐस्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि, स्थापयामि।
४ बुधस्य ,, ,, ॐविष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।
५ गुरोः ,, ,, ॐब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।
६ शुक्रस्य ,, ,, ॐइन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।
७ शनेः ,, ,, ॐयमाय नमः। यममावाहयामि, स्थापयामि।
८ राहोः ,, ,, ॐकालाय नमः। कालमावाहयामि, स्थापयामि।
९ केतोः ,, ,, ॐचित्रगुप्तायनमः। चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि।

❁ अथ प्रत्यधिदेवताऽवाहनम् ❁

१ सूर्यस्य वाम-पार्श्वे ॐ अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।
२ चन्द्रस्य ,, ,, ॐ अद्भ्यो नमः। अप आवाहयामि, स्थापयामि।
३ भौमस्य ,, ,, ॐ पृथिव्यै नमः। पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि।
४ बुधस्य ,, ,, ॐ विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।
५ गुरोः ,, ,, ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६ भृगोः ,, ,, ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्रणीमावाहयामि, स्थापयामि।
७ शनेः ,, ,, ॐ प्रजापतये नमः। प्रजापतिमावाहयामि, स्थापयामि।
८ राहोः ,, ,, ॐ सर्पेभ्यो नमः। सर्पानामावाहयामि, स्थापयामि।
९ केतोः ,, ,, ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

❀ अथ पञ्चलोकपालाऽऽवाहनम् ❀

१ राहोरुत्तरतः- ॐ गणेशाय नमः। गणेशमावाहयामि, स्थापयामि।
२ शनेरुत्तरतः- ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि।
३ सूर्यादुत्तरतः- ॐ वायवे नमः। वायुमावाहयामि, स्थापयामि।
४ राहोर्दक्षिणतः-ॐ व्योमाय नमः। व्योममावाहयामि, स्थापयामि।
५ केतोर्दक्षिणत- ॐ अश्विभ्यां नमः। अश्विनामावाहयामि, स्थापयामि।

(तथा च)

१ गुरोरुत्तरे- ॐ क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालमावाहयामि, स्थापयामि।
२ क्षेत्राधिपोत्तरे-ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। वास्तुपुरुषमावाहयामि, स्थापयामि।

पुनः यजमान 'ॐ मनोजूति०' (पुर्वलिखित) मन्त्र द्वारा उपरोक्त समस्त देवताओं की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिष्ठा करके 'पूजयामि'-ऐसा कहकर पूर्व-लिखित विधि-अनुसार षोडशोपचार पूजन करे।

॥ इति नव-ग्रहाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता पूजनं समाप्तम् ॥

(यजमान द्वारा) आचार्य को 'तिलक' करने का मन्त्र—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ (ऋग्वेदः) ॥

(यजमान द्वारा) आचार्य को 'वरण' करने का मन्त्र—

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

(आचार्य द्वारा) यजमान को 'तिलकाशीर्वाद' करने का मन्त्र—

"श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥
(स्वस्ति कल्याणमस्तु)

आचार्य नीचे-लिखे मन्त्र से यजमान के दक्षिण हाथ में 'रक्षा-बन्धन' करे—

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेन त्वामभिबध्नामि, रक्षे मा चल मा चल ॥ इतिः ॥

आचार्य मण्डप में नीचे-लिखे मन्त्र से 'यजमान पत्नी' के वाम-हस्त में 'रक्षासूत्र' बाँधे-

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः ॥

(१) अथ महाकाली-ध्यानम्

ॐ खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः ।
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां, सर्वांगभूषावृताम् ।
नीला श्मद्युतिभास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकां,
या मस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो, हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

अथ महाकाली मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

॥ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणे कालिके क्रीं ३ ह्रीं २ हूँ २ स्वाहा ॥

(२) अथ ताराध्यानम्

ॐ प्रत्यालीढपदार्पिताङ्घ्रिशवहृद् घोराट्टहासा परा ।
खंगेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजा, हुंकार - बीजोद्भवा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खर्वां नीलविशालपिंगलजटाजूटैकनागैर्युता,
जाड्यन्न्यस्य कपालकर्त्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ।।

अथ तारा मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

।। ऐं ओं ह्रीं त्रीं हूँ फट् ।।

(३) अथ त्रिपुरसुन्दरी (षोडशी) ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशशराँश्चापन्धारयन्तीं शिवां भजे ।।

अथ त्रिपुर सुन्दरी (षोडशी) मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

।। ह्रीं क एल ह्रीं ह सकल ह्रीं सकल ह्रीं ।।

(४) अथ भुवनेश्वरी ध्यानम्

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां, तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशा, भीतिकरां प्रभज भुवनेशीम् ।।

।। अथ भुवनेश्वरी मन्त्रः ।।

ॐ 'ह्रीं' भुवनेश्वर्यै नमः ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) अथ छिन्नमस्ता ध्यानम्

ॐ प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं, छिन्नं शिरः कर्त्तृकां,
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधा-धारां पिबन्तीं मुदा।
नागबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां, हृद्युत्पलाऽल्लङ्कृतां,
रत्यासक्तमनोभवो परिहृढां, ध्यायेज्जवासन्निभाम्॥
दक्षे चातिसिताविमुक्तचिकुराकर्त्रन्तिथा खर्प्परम्।
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा, नाम्नापि सार्वर्णिनी।
देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्ती मुद्रा,
नागबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सासुरैः॥

अथ छिन्नमस्ता मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

॥ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा॥

(६) अथ त्रिपुर भैरवी ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्तालिप्तपयोधरां जपपटी विद्यामभीतिम्वराम् ॥
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रार विन्दश्रियं ।
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां, वन्दे सुमन्दस्मिताम् ॥

अथ त्रिपुरभैरवी मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

॥ हसैं हसकरीं हसैं ॥

(७) अथ धूमावती ध्यानम्

ॐ विवर्णा चञ्चला दुष्टा, दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रुक्षा, विधवा विरल द्विजा ।
काकध्वज रथारूढ़ा, विलम्बितपयोधरा ।
शूर्पहस्ताऽतिरूक्षाक्षा, धूतहस्ता वरान्विता ॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशङ्कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं, भयदा कलहास्पदा ॥

अथ धूमावती मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

"धूँ धूँ धूमावती ठः ठः"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(८) अथ बगलामुखी ध्यानम्

इस मन्त्र के यथाविधि जप करने से मुकद्दमा, युद्ध, विवाद आदि में शत्रु से विजय प्राप्ति अवश्यमेव होती है ।

ॐ मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेदी,-सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभषितांगीं, देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं, वामेन शत्रून्परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां, पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभांगरुचिं शशांक मुकुटां, स्त्रक् चम्पकस्त्रग्युताम् ।।
हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां, सम्बिभ्रतीं भूषणम् ।
व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां, संस्तम्भिनीं चिन्तये ।। इति ।।

अथ श्रीबगलामुखी मन्त्राः—

अथ मन्त्र महोदधौ-"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।"(३६अक्षरमंत्र)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ शाक्तप्रमोदे-"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।' (३६ अक्षर मंत्र)

अथ मंत्रमहार्णवे-"ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून्नाशय नाशय मामैश्वर्य्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छित कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।" (४८ अक्षर मंत्र)

(६) अथ मातंगी ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे, शुककलपठितं, शृण्वतीं श्यामलांगीं,
न्यस्तैकाङ्घ्रि सरोजैः शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चूडिकां रक्तवस्त्रां,
मातंगीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासि भालाम्।

अथ मातंगी मन्त्रः (शाक्त-प्रमोदे)

इस मन्त्र के यथा-विधि जप करने से वाक्-सिद्धि निश्चय प्राप्त होती है।

॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातङ्ग्यै फट् स्वाहा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१०) अथ कमला ध्यानम्

ॐ कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः—
हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां,
क्षौमाबद्धनितम्ब-बिम्ब-ललितां, वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

अथ कमला मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

उपरोक्त मन्त्र के यथा-विधि जप करने से सदैव लक्ष्मी स्थिर रहती है और घर में मंगल-कार्य होते रहते हैं ।

(११) अथ कुमारी ध्यानम्

ॐ बालरूपां च त्रैलोक्य-सुन्दरीं वरवर्णिनीम् ।
नानालंकारनम्राङ्गीं, भद्रविद्या-प्रकाशिनीम् ॥
चारुहास्यां महानन्द-हृदयां शुभदां शुभाम् ।
सर्वानन्दकरीं देवीं, ऋणमुक्तिकरीं भजे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ कुमारी (तान्त्रिक) मन्त्रम् (रुद्रयामले)

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूँ ह्सौः कुमार्यै नमः ॥

विधि-चैत्र-शुक्ल अथवा आश्विन-शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमापर्यन्त, शुद्ध होकर नित्य 'अजात-पुष्पा-कन्या' का उपरोक्त मन्त्र से यथा-विधि पूजन करे और दैनिक भोजन देवे तो अवश्य ही ऋण (कर्ज) से छूट जाता है, यथा-विधि जप करे तो सर्व कामनाऐं पूर्ण हों।

(१२) अथ दुर्गा ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितांभीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोःस्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

अथ तान्त्रिक दुर्गा मन्त्रः

॥ ॐ ह्रीं दुन्दुर्गायै नमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१३) अथ बटुक-भैरव ध्यानम्

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

अथ आपदुद्धारक बटुक मन्त्रः (रुद्रयामले)

॥ ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरुकुरु बटुकाय ह्रीम् ॥ (२१ अक्षर मंत्र)

(१४) अथ स्वर्णाकर्षण भैरवमन्त्रः (मन्त्र महार्णवे)

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धाय लोकेश्वर य स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्यविद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।"

(५७ अक्षर मन्त्र)

अथवा—ॐ बं बटुकाय नमः ॥

(१५) अथ गायत्री ध्यानम्—

ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शुभ्रं कपालं गुणं,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंखं चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्ती भजे ॥

अथ (वेदोक्त) गायत्री मन्त्रः—

ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ "तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात्" ॐ ॥

(१६) अथ सूर्य ध्यानम्—

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती, नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान्किरीटी, हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥
भास्वद्रत्नाढ्यमौलिः स्फुरदधररुचा रञ्जितश्चारुकेशो,—
भास्वान् यो दिव्यतेजाः करकमलयुतः स्वर्णवर्णः प्रभाभिः ।
विश्वाकाशावकाशो ग्रहगणसहितो भाति यश्चोदयाद्रौ,
सर्वानन्दप्रदाता हरिहरनमितः पातु मां विश्वचक्षुः ॥

अथ (तान्त्रिक) सूर्य मन्त्रः—

ॐ घृणिः सूर्य्य आदित्यः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१७) अथ शिव ध्यानम्—

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभंचारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

अथ (तान्त्रिक) पंचाक्षरी शिव मन्त्रः (शाक्त प्रमोदे)—

ॐ "नमः शिवाय" ॥ (५ अक्षर मन्त्र)

अथ अष्टाक्षरी शिव मन्त्रः (शारदा तिलके)—

"ह्रीं ॐ नमश्शिवाय ह्रीं" (८ अक्षर मन्त्र) ॥

(१८) अथ विष्णु ध्यानम्

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मी-कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सशंखचक्रं सकिरीट कुण्डलं, सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षःस्थल कौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

अथ तान्त्रिक विष्णु मन्त्रः—

ॐ नमो नारायणाय ॥ १ ॥ तथा—ॐ विष्णवे नमः ॥ २ ॥

अथ वेदोक्त विष्णु मन्त्रः—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
सभूमि ँ सर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ ४ ॥

(१९) श्रीरामध्यानम्—

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं,
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूड़ामणिम् ॥ १ ॥

कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं, वीरासनाध्यासिनं,
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं, हस्ताम्बुजं जानुनि ।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां, विद्युन्निभां राघवं,
पश्यन्तीं मुकुटांगदादिविविधाकल्पोज्ज्वलांगं भजे ॥ २ ॥

अथ दशाक्षर राम मन्त्रः– (शारदायाम्)–

॥ "हुँ जानकी वल्लभाय स्वाहा" ॥

अथ षडक्षर राम मन्त्रः–(मन्त्र महार्णवे)–

॥ "रां रामाय नमः" ॥

नीचे लिखे श्रीराम मन्त्र को ४१ दिन लगातार १ हजार नित्य जपै तो घोर आपत्ति दूर होती है—ऐसा महात्माओं का वचन है ।

ॐ आपदामपहर्तारं, दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाऽभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ॐ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२०) अथ श्री सीताध्यानम्—

ॐ उद्भवस्थितिसंहार-कारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां, नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥

अथ सीता मन्त्रः—

'ॐ श्रीं शक्तिरूपिण्यै सीतायै नमः' (अथवा) 'ॐ रम रम रामप्रियायै नमः' ।

(२१) अथ श्रीहनुमान-ध्यानम्—

ॐ बालार्कायुततेजसं त्रिभुवनप्रक्षोभकं सुन्दरं, सुग्रीवादिसमस्तवानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम् ।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान्संत्रासयन्तं प्रभुं, श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं, ध्यायामि वातात्मजम् ॥

अथ हनूमदष्टादशाक्षरमन्त्रः (मन्त्र महोदधौ)-

ॐ "नमो भगवते आंजनेयाय महाबलायस्वाहा" (१८ अक्षर मन्त्र) ॥

अथ हनूमद्द्वादशाक्षरमन्त्रः (गारुडीतंत्रे)

ॐ "हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुँ फट्" ॥ (१२ अक्षर मन्त्र) ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ हनूमद्दशाक्षरमन्त्रः–(अथ मन्त्रमहार्णवे)

ॐ "हं पवननन्दनाय स्वाहा" ॥ (१० अक्षर मन्त्र) ॥

अथ नृसिंह मन्त्रः (शारदा तिलके)–

ॐ क्ष्रौं उग्रवीरं महाविष्णुं, ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं, मृत्युमृत्युं[१] नमाम्यहम् । क्ष्रौं ॐ ॥

(२२) अथ श्रीगणेशध्यानम्–

ॐ उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः, पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् ॥
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं, ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ।

अथ गणेशमन्त्रः (शाक्तप्रमोदे)–

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय ठःठः" ॥

अथ षडक्षरवक्रतुण्डमन्त्रः (मन्त्र-महोदधौ)–

॥ "वक्रतुण्डाय हुम्" ॥

अथैकत्रिंशदक्षरवक्रतुण्ड मन्त्रः (मन्त्र-महोदधौ)–

१—मृत्योर्मृत्युं—अपि पाठः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रायस्पोषस्य ददिता निधनो रत्नधातुमान् रक्षोहणो-बल गहनो वक्रतुण्डायहुम्'

अथोच्छिष्ट-गणपतिनवार्णमन्त्रः (मन्त्र-महोदधौ)–

"हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा" ॥

अथ द्वादशाक्षरोच्छिष्टगणेशमन्त्रः (मन्त्र-महोदधौ)–

"ॐ ह्रीं गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा" ॥

अथ ऋण-दारिद्र्यहर्तृ-गणेशमन्त्रः (मन्त्र-महार्णवे)–

"ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुँ नमः फट् ॥ (१५ अक्षर मन्त्र) ॥

अथ वीरभद्रोड्डीशतन्त्रे गणपतिमन्त्रः

"ॐ गं गणपतये नमः" ॥

अथ गणेश-गायत्री मन्त्रः–

"तत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डायधीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात्" ॥

(२३) अथ श्रीकृष्ण ध्यानम्

ॐ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले, वक्षःस्थले कौस्तुभं–

नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥

अथ षडक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'क्लीं कृष्णाय स्वाहा' ॥

अथ अष्टाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा' ॥

अथ अष्टाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'क्लीं हृषीकेशाय नमः' ॥

अथ दशाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'गोपीजन वल्लभाय स्वाहा' ॥

अथ द्वादशाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा' ॥

अथ चतुर्दशाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' ॥

अथ षोडशाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

'ॐ नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा' ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ अष्टादशाक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः (शारदा-तिलके)—

'क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' ॥

अथ द्वाविंशत्यक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः

ऐं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा सौं' ॥

अथ त्रयस्त्रिंशदक्षरः श्रीकृष्णमन्त्रः—

**'ॐ क्लीं नमो भगवते नन्दपुत्राय बालादिवपुषे श्यामलायगोपी-
जनवल्लभाय स्वाहा' ॥**

अथ सन्तान-गोपाल मन्त्रः (हरिवंशे)—

**ॐ क्लीं-देवकी सुत ! गोविन्द ! वासुदेव ! जगत्पते !
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः ॥' क्लीं ॐ ॥**

अथ दारिद्रय-नाशक गोपालमन्त्रः (सहस्रनामावल्याम्)—

**'ॐ क्लीं-नन्दादिगोकुलत्राता, दाता दारिद्रय-भञ्जनः ।
सर्वमंगलदाता च, सर्वकामप्रदायकः ॥'**

अथ दुःस्वप्न-नाशक कृष्णमन्त्रः—

ॐ कृष्ण कृष्ण कृपासिन्धो ! कृष्ण कृष्ण हरे हरे !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृष्ण कृष्ण महाबाहो ! दुःस्वप्नन्नाशय प्रभो !

अथ संमोहन श्रीकृष्णमन्त्रः (सहस्रनामावल्याम्)—

ॐ कृष्णः कमलपत्राक्षः, कृष्णः कमललोचनः ।
कृष्णः कामी सदाकृष्णः, समस्त—प्रियकारकः ॥

अथ चतुर्दशाक्षरः श्रीलक्ष्मी-नारायण मन्त्रः (शारदा-तिलके)—

'ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः ॥'

अथ मोक्षदायक द्वादशाक्षरी विष्णुमन्त्रः (शारदायाम्)—

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥'

अथ हयग्रीव विष्णुमन्त्रः (तंत्रसारे)—

'हंसः सोऽहं विश्वातीर्ण-स्वरूपाय, चिन्मयानन्दरूपिणे ।
तुभ्यं नमो हयग्रीव! विद्याराजाय विष्णवे स्वाहा हंसःसोऽहम्॥' (२४ अक्षरमंत्र)

अथ सर्व-सिद्धिप्रद महामन्त्रः—

ॐ हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे !
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे !!

(२४) अथ वाराह-रूप विष्णोर्ध्यानम्—

ॐ आपादं जानुदेशाद्वरकनकनिभं नाभिदेशादधस्ता,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्मुक्ताभं कण्ठदेशात्तरुणरविनिभं मस्तकान्नीलभासम् ।
ईडे हस्तैर्दधानं रथचरणदरौ खड्गखेटौ गदाख्यां,
शक्ति दानाभये च क्षितिधरणलसद्दंष्ट्रमाद्यं वराहम् ॥

अथ वाराह-रूप विष्णुमन्त्रः (शारदा-तिलके)—

'ॐ नमो भगवते वाराहरूपाय भूर्भुवः स्वः स्यात्पते भूपति त्वं देह्यते ददापय स्वाहा ॥" (३३ अक्षर मन्त्रः) ॥

(२५) अथ सरस्वती ध्यानम्—

ॐ शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं—
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

अथ सरस्वतीदशाक्षरमन्त्रः—(मन्त्रः-महोर्णवे)—

'वदवद वाग्वादिनि स्वाहा'

दो अक्षर का मन्त्रः—(तन्त्रान्तरे)—'ऐं लृं'

अथ एकादशाक्षरः सरस्वती मन्त्रः (शारदा-तिलके)—

'ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः' ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ऐं वाचस्पतेऽमृते प्लव प्लव' ॥ २ ॥

अथ सरस्वतीमन्त्रः (प्राकृत ग्रन्थे)

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवति अर्हन्मुखनिवासिनि सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः ॥

(२६) अथ श्री शत्रुघ्नध्यानम्-(आनन्द रामायणे)

शत्रुघ्नं धृतकार्मुकं धृतमहातूणीरबाणोत्तमम् ,
पार्श्वे श्रीरघुनन्दनस्य विनयाद्वामे स्थितं सुन्दरम् ।
रामं स्वीयकरेण तालदलजं धृत्वाऽतिचित्रं वरं ।
सूर्याभं व्यजनं सभास्थितमहं तं वीजयन्तं भजे ॥

अथ शत्रुघ्न मन्त्रः

ॐ शं शत्रुघ्नाय नमः ॥

(२७) अथ गरुड़ध्यानम्

तप्तस्वर्णनिभं फणीन्द्रनिकरैः, क्लृप्तांगभूषं प्रभुं ,
स्मर्तॄणां शमयन्तमुग्रमखिलं नृणां विषं तत्क्षणात् ।
चञ्च्वग्रप्रचलद्भुजंगमभयं, पाण्योर्वरं बिभ्रतं ,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पक्षोच्चारितसामगीतममलं, श्रीपक्षिराजं भजे ॥

अथ हरि-वाहन गरुड़ मन्त्रः (मन्त्र महोदधौ)

"क्षिप ॐ स्वाहा" ॥ (५ अक्षर मन्त्रः) ॥

(२८) अथ श्रीयमुनादेवीध्यानम्

ॐ श्यामाभांभोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमञ्जीरकूजत्,
काञ्चीकेयूरयुक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे।
भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रां स्फुरदमलचलद्धारभारां मनोज्ञां,
ध्याये मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम्।

अथ श्री यमुनामन्त्रः (मन्त्रमहार्णवे)

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्दीदेव्यै नमः" ॥ (११ अक्षर मन्त्रः) ॥

२९ अथ श्री गंगादेवी ध्यानम्

ॐ उत्फुल्लामलपुण्डरीकरुचिरा कृष्णेशविन्ध्यात्मिका।
कुम्भेष्टाभयतोयजानि दधती, श्वेताम्बराऽलङ्कृता।
हृष्टास्या शशिशेखराऽखिलनदीशोणादिभिः सेविता,
ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकैः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ श्री गंगादेवी मन्त्रः (मन्त्रमहोदधौ)

'ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा' ॥ (२० अक्षर मन्त्र)

'ॐ नमो भगवति ऐं हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे मां पावय-पावय स्वाहा' ॥ (२७ अक्षर मन्त्र) ॥

(३०) अथ शीतलादेवीध्यानम्—

ॐ दिग्वाससं मार्जनिकां च शूर्पं, करद्वये संदधतीं घनाभाम् ।
श्रीशीतलां सर्वरुजार्तिहन्त्रीं, रक्तांगरागस्रजमर्चयामि ॥

अथ शीतला मन्त्रः- (मन्त्र महोदधौ)

'ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः' ॥ (६ अक्षर मन्त्रः) ॥

(३१) अथ श्री अन्नपूर्णादेवीध्यानम्—

ॐ तप्तस्वर्णनिभा शशांकमुकुटा रत्नप्रभाभासुरा ,
नानावस्त्रविराजिता त्रिनयना, भूमीरमाभ्यां युता ।
दर्वीं हाटकभाजनञ्च दधती रम्योच्चपीनस्तनी ,
नित्यं तं शिवमाकलय्य मुदिता, ध्यायेन्नपूर्णेश्वरी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ अन्नपूर्णादेवी मन्त्रः (मन्त्रमहार्णवे)

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा' (२० अक्षर मन्त्र)

'ह्रीं नमोः भगवति माहेश्वर्यन्नपूर्णे स्वाहा'। 'मन्त्र-महोदधौ' (१८ अक्षर मन्त्र)

अन्यच्च-'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्नं देहि देह्यन्नपूर्णे स्वाहा' ।। (३१ अक्षर मन्त्र) ।।

अन्यच्च-'ॐश्रींह्रींनमोभगवतिमाहेश्वरिप्रसन्नवरदेऽन्नपूर्णे स्वाहा'।(२५ अक्षर मन्त्र)

(३२) अथ श्री मृत्युञ्जयध्यानम्—

ॐ चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं मह—
द्धस्ताब्जेन दधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपंकेरुहम् ।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशा—
म्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ।। १ ।।
हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो- ,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् ।
अंकन्यस्तकरद्वयाऽमृतघटं कैलासकान्तं शिवं ,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥ २ ॥

अथ महामृत्युञ्जयमन्त्रः—(मन्त्रमहोदधौ)

'ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् । स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥ १ ॥

अथ अमृतसञ्जीवनीमन्त्रः-(तन्त्रसारे)

'ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं, भर्ग्गो देवस्य धीमहि। उर्व्वारुकमिवबन्धनाद्धियो यो नः प्रचोदयान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ २ ॥

तुलसी को नमस्कार करने का मन्त्र—(आह्निककर्मसूत्रावल्याम्)

ॐ विष्णुप्रीतिकरे मातर्नमस्ते तुलसीश्वरि ।
पवित्री कुरु मेऽङ्गानि, विष्णवंकहर्षकारिणि ॥

तुलसी को स्पर्श करने का मन्त्र (आह्निककर्मसूत्रावल्याम्)

ॐ वैकुण्ठेश्वरपादाब्ज-वासिनि प्रियदर्शने ।
स्पृशामि त्वां महापापसञ्चयान्मे प्रणाशय ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी को ग्रहण करने का मन्त्र—(स्कन्द-पुराणे)

ॐ मातस्तुलसि कल्याणि, गोविन्दचरणप्रिये ।
केशवार्थे चिनोमि त्वां, प्रसीद शुभदर्शने ॥ १ ॥
तुलस्यमृतजन्मासि, सदा त्वं केशवप्रिया ।
केशवार्थे चिनोमि त्वां, वरदा भव शोभने ॥ २ ॥
तुलसी हेमरूपासि, कृष्णरूपेण मंजरी ।
शालिग्रामहितार्थाय, मम दोषो न दीयते ॥ ३ ॥

अथ श्री राधिका गायत्री मन्त्रः—

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि । तन्नो राधिका प्रचोदयात् ।

१—तैल मर्दन करके तुलसी-पत्र तोड़ना तथा बिना स्नान किये तुलसी-पत्र तोड़ना निषेध है। पूर्णिमा, अमावस्या, द्वादशी-तिथि, संक्रांति और रविवार को भी तुलसी-पत्र तोड़ना सर्वथा त्याज्य हैं तथा सन्ध्या रात्रि के समय भी तुलसी-पत्र न तोड़े-यह "वायु पुराण" का वचन है ॥ १ ॥

२—पश्चिम की ओर मुख करके तुलसी-पत्र न तोड़े और जूता पहिने हुए तुलसी-पत्र न तोड़े, एवं पक्षांत के दिन तुलसी-पत्र तोड़ना निषिद्ध है—यह "धर्म-शास्त्रों" का मत है ॥ २ ॥

"नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं, न तुलस्या विनायकम्। दूर्वया न यजेद्दुर्गां, न शंभुं शंखवारिणा ॥

"इति सिद्धान्त संग्रहे"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ श्री राधिका मन्त्रः (मन्त्र महार्णवे)—

'ॐ राँ राधिकायै नमः' ॥

* अथ मूर्तीनामग्न्युत्तारण प्राणप्रतिष्ठा-विधि *

तत्राऽऽदौ[1] संकल्पः—

देशकालौ स्मृत्वा आसां स्वर्णमयमूर्त्तीनामग्नितपनताडनावघातादिदोषनिवारणार्थं अग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं प्राण-प्रतिष्ठाञ्च करिष्ये ।

पुनः मूर्त्तीर्घृतेनाभ्यज्य धातुपात्रे निधाय तदुपरि गो दुग्धमिश्रित जलधाराञ्च पातयेत् ।

अथ[2] विनियोगः—

ॐ समुद्रस्यत्वा तथा ॐ हिमस्य त्वा-इति द्वयोः मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दः, अग्निर्देवता ॥ २ ॥ ॐ उपज्मन्नुपेति मेधातिथिर्ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, अग्निर्देवता ॥ ३ ॥ ॐ अपामिदमित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः, बृहतीछन्दः,

१—प्रतिज्ञा । २—संविधानम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निर्देवता ॥४॥ ॐ अग्नेपावकेति वसूयुर्ऋषिः, गायत्रीछन्दः, अग्निर्देवता ॥५॥ ॐ सनःपावकेत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः, निचृद्गायत्रीछन्दः, अग्निर्देवता ॥६॥ ॐ पावकयेत्यस्य भारद्वाजऋषिः, जगतीछन्दः, अग्निर्देवता ॥ ७ ॥ ॐ नमस्त इत्यस्य लोपामुद्राऋषिः, बृहतीछन्दः, अग्निर्देवता ॥ ८ ॥ ॐ नृषदेव्वेडिति लोपामुद्राऋषिः, दैवीबृहतीछन्दः, अग्निर्देवता ॥ ९ ॥ ॐ ये देवा देवानां तथा ॐ षे देवा देवेष्वधीति द्वयोः लोपामुद्राऋषिः, जगतीछन्दः, अग्निर्देवता ॥१०॥११॥ ॐ 'प्राणदा'-इत्यस्य प्रजापतिऋषिः, बृहतीपंक्तिश्छन्दः, अग्निर्देवता ॥ १२ ॥

* सर्वेषामग्न्युत्तारणे विनियोगः *

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि । पावकोऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि । पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव ॥ २ ॥ ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेवतर नदीष्वा । अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्ण ७ शिवङ्कृधि ॥ ३ ॥ ॐ अपा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिदन्न्ययन ७ँ समुद्रस्य निवेशनम् । अन्याँस्ते ऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽ-अस्मभ्य ७ँ शिवो भव ॥४॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आदेवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥ ॐ स नः पावक दीदिवोग्ने देवाँ २ इहावह । उपयज्ञ ७ँ हविश्चनः ॥६॥ ॐपावकयायश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुरुच ऽ उषसोन भानुना । तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नूरण ऽ आ यो घृणेन ततृषाणो ऽ अजरः ॥७॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽ अस्त्वर्चिषे । अन्याँस्ते ऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य७ँशिवो भव ॥८॥ ॐ नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्बर्हिषदेव्वेड्वनसदे-व्वेट् स्वर्व्विदेव्वेट् ॥९॥ ॐये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ७ँ संव्वत्सरीणमुप भागमासते । अ हुतादो हविषो यज्ञे ऽ अस्मिन्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥१०॥ ॐये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर ऽ एतारो ऽ अस्य । येभ्यो न ऽ ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽ अधिस्नुषु ॥ ११ ॥ ॐ प्राणदा ऽ अपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः । अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ँ शिवो भव ॥१२॥ इत्यग्न्युत्तारणम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः *

तत्रादौ विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, पराप्राणशक्ति देवताः, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकम्, आसु स्वर्णादि प्रतिमासु प्राण-प्रतिष्ठापने विनियोगः ॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों आसां मूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः ॥ १ ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों आसां मूर्तीनां जीवा इह स्थिताः ॥२॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों आसां स्वर्ण-मय मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वा घ्राणपाणिपादपायूप-स्थानि' इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ पुनः प्रणवस्य १६ षोडशा-वृत्तीः कुर्यात् ॥

* अथ प्रतिष्ठापनम् *

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समिमन्दधातु । विश्वे देवा स ऽ इह मादयन् तामों ३ म्प्रतिष्ठ ॥ १ ॥

(ब्राह्मणम्)-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्येति । मनसा वा ऽ इदꣳसर्व्वमाप्तन्तन्मनसैवैतत्सर्व्वमाप्नोतिबृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमंदधात्विति यद्विवृढंतत्संदधाति विश्वेदेवा स ऽ इहमादयन्तामिति सर्व्वंव्वैविश्वेदेवाः सर्व्वेणैवैतत्सन्दधाति स यदि कामयेत ब्रूयात्प्रतिष्ठेति यद्युकामयेतापिनाद्रियेत ॥२॥ ॐ एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥३॥ (अमुक) आवाहित देवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ।

अथ मूर्तीनां नेत्रोन्मीलनम्

"ॐ व्वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽ असि चक्षुर्म्मे देहि ॥"

ततः गन्धादि पंचोपचारैः पूजयित्वा पुनश्चषोडशसंस्कारसिद्धये षोडशप्रणवावृत्तीः कुर्यात् । 'आसां स्वर्णमयमूर्तीनां षोडशसंस्काराः सम्पद्यताम् ।' (पुनः षोडशोपचारैर्देवंप्रपूजयेत्) ॥

॥ इति प्राण प्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ अथ षोडशोपचार पूजाविधिः ❋

१ ॐ सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् । २ ॐ पुरुषऽएवेत्यासनम् । ३ ॐ एतावानस्येति पाद्यम् । ४ ॐ त्रिपादूर्ध्वमित्यर्घ्यम् । ५ ॐ ततो विराडितिआचमनीयम् । ६ ॐ तस्माद्यज्ञादिति स्नानीयम् । ७ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः-इति वस्त्रोपवस्त्रम् । ८ ॐ तस्मादश्वेत्युपवीतम् । ९ ॐ तँ यज्ञमिति गन्धम् । १० ॐ यत्पुरुषमिति पुष्पाणि । ११ ॐ ब्राह्मणोस्येति धूपम् । १२ ॐ चन्द्रमा मनस इति दीपम् । १३ ॐ नाभ्याआसीदिति नैवेद्यम् । १४ ॐ यत्पुरुषेणेति पूगीफल दक्षिणायुतताम्बूलम् । १५ ॐ सप्तास्यासन्निति प्रदक्षिणा । १६ ॐ यज्ञेन यज्ञमिति आरार्तिकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिनमस्कारञ्च समर्पयेत् । इतिषोडशोपचारपूजाक्रमः ॥

❋ अथ मन्त्र-पुष्पाजलिः ❋

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ते हनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने । नमो वयं वैश्रवणाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।। ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् । सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । अविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति । ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो वाहुरुत विश्वतस्यात् । संबाहुभ्यान्धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव ऽ एकः ।। नाना सुगन्धिपुष्पाणि, ऋतुकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलि प्रदानेन, देहिमे हीप्सित वरम् ।।

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

।। इति मन्त्र पुष्पाञ्जलिः ।।

—:※:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh